॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 19 अंक : 5 10 मार्च 2019 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

ऋषि बोधोत्सव

वेद प्रतिपादित शिव की उपासना करो

-सत्यव्रत सामवेदी

जयपुर 4 मार्च। विश्व की समस्त आर्य समाजों में महाशिवरात्रि के दिन वेद प्रतिपादित शिव की निम्नलिखित मंत्रों से प्रार्थना हुई-

ओम नमः शंभवायच मयो भवायच नमः शंकरयाच मयस्करायच नमः शिवायच शिव तरायच
ओम शांति, शांति, शांति

आर्य समाज राजापार्क, जयपुर के सभागार में उत्सव को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि यह सब को ज्ञात है कि महर्षि दयानन्द का जन्म कट्टर शिवोपासक परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था में पिता ने अपने पुत्र मूलशंकर को शिवरात्रि के दिन व्रत रखने एवं शिव की उपासना करने का आदेश दिया। रात्रि के समय शिव मंदिर में सब भक्त सो गए और 13-14 वर्ष का मूलशंकर जाग रहा है। मूलशंकर ने सुना था कि शिव असुरों का संहार करता है, उसके तांडव नृत्य से प्रलय हो जाती है, वह सर्वाधिक शक्तिशाली देवता है, वह अपने त्रिशूल से दुष्टों का संहार करता है। मूलशंकर को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि शिव पर जो नैवेद्य चढ़ाया गया, चूहे उसे खा रहे हैं। यह सब देखकर मूलशंकर आश्चर्य चकित हुआ कि जो अपने रक्षा चूहे से नहीं कर सकता वह प्राणिमात्र की रक्षा क्या करेगा? मूलशंकर के हृदय में उत्कट कामना उत्पन्न हुई कि मैं सच्चे शिव की तलाश करूंगा जो ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करता है, जो दुष्टों का संहार करता है और धर्म की रक्षा करता है।

मूलशंकर 19 वर्ष तक सच्चे शिव की तलाश में भटकता रहा और अंत में प्रज्ञा चक्षु दण्डी विरजानन्द का शिष्य बनकर वेदों का ज्ञान हुआ और सच्चे शिव के दर्शन हुए।

संन्यासी बनने के बाद मूलशंकर स्वामी दयानन्द बन गया और सारे विश्व को सच्चे शिव के दर्शन और उपासना का संदेश दिया। भारतवर्ष पर सांस्कृतिक आक्रमण हो गया था। राजनीतिक दृष्टि से तो हम पराजित हो ही चुके थे और अब ईसाई मिशनरियों द्वारा वैदिक संस्कृति को पूर्णतः नष्ट करने का प्रयास चल रहा था। ईसाई मिशनरियों ने प्रचार करना शुरू किया कि भारतवासी जो वेदों को ईश्वर कृति मानते हैं मूर्ख, जाहिल, पाखंडी, अंधविश्वासी हैं और ईश्वर ने हमें इस धरती पर मानव जाति को सभ्य और सुसंस्कृत करने के लिए भेजा है। ईसाईयों और मुसलमानों के वैदिक संस्कृति के नाम पर प्रचलित पौराणिकों पर हमला किया और कहाकि मूर्ति पूजा एवं बहु देवतावाद अधर्म है। विश्व में केवल एक ईश्वर की ही सत्ता है। भारतवर्ष में बहु देवतावाद की निर्गुण भक्ति सम्प्रदाय में जबर्दस्त आलोचना हुई और कबीर ने अनेक देवताओं की पूजा करने वाले भक्तों का मजाक उड़ाते हुए लिखा-

राम पियारा छाड़ि कर - करे आन का जाप
बेस्या केरा पूत ज्यूं - कहे कौन सो बात

अनेक देवताओं की पूजा करने वाले की तुलना कबीर ने वेश्या पुत्र से की जिसे यह भी मालूम नहीं कि उसका पिता कौन है? वह कभी राम को, कभी कृष्ण को, कभी शिव को, कभी विष्णु को, कभी ब्रह्मा को अपना पिता मानता है। ईसाई और मुस्लिम मिशनरियों ने भी एक ईश्वरवाद के नाम पर बहु देवतावादियों पर हमला किया और अपने तर्क बाणों से पौराणिकों के वक्षस्थल को विदीर्ण कर दिया। हिन्दी के महान कवि रामाधारी सिंह दिनकर ने लिखा कि ईसाई और मुस्लिम मिशनरियों के तर्कों का पौराणिक जवाब ही नहीं दे पाता था और भयंकर आलोचना के बावजूद हंसिया कर चुप रह जाता था। उसके पास प्रतिवाद करने के लिए कुछ था ही नहीं। इन परिस्थितियों में वैदिक संस्कृति का अंतिम टिमटिमाता दीपक बुझने ही वाला था और सारा देश ईसाई बनने के लिए तैयार हो गया था। भारतवर्ष के तत्कालीन महान नेता केशवचन्द्र सेन ने तो भारतवर्ष को ईसाई धर्म स्वीकार करने का संदेश जारी कर दिया। इन विषम परिस्थितियों में मूलशंकर दयानन्द के वेश में वैदिक संस्कृति का डिम-डिम निनाद करता हुआ भारत की धरा पर अवतरित हुआ। फ्रांस के नोबल पुरस्कार विजेता रोम्यॉ रोला ने लिखा है कि केवल मात्र दयानन्द ने ईसाई मिशनरियों को चुनौती दी और उन पर युद्ध की घोषणा कर दी तथा अपने तर्क बाणों से ईसाई मिशनरियों के वक्षस्थल को क्षत विक्षत कर दिया। ईसाई मिशनरियों में हड़कम्प मच गया और उन्होंने स्वीकार किया कि दयानन्द का मुकाबला करना असंभव है।

दयानन्द ने घोषणा की कि सृष्टि के आरंभ में ईश्वर ने मानव जाति ही नहीं अपितु प्राणि मात्र के कल्याण के लिए वेद का ज्ञान दिया और वेद मार्ग पर चलकर ही संसार का कल्याण हो सकता है। दयानन्द ने घोषणा की

कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है। वेद केवल धर्म का पुस्तक ही नहीं अपितु समस्त विज्ञान भी वेद में ही निहित हैं। विज्ञान, गणित, साहित्य, संगीत, ज्योतिष सब विषयों का ज्ञान वेदों में है। दयानन्द ने घोषणा की कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और कुरान तथा बाईबल पथभ्रष्ट, अशिक्षित, अज्ञानी लोगों की कृतियां है। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने के लिए दयानन्द ने तर्क दिया- जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्धगुणकर्मस्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत; अन्य नहीं। और जिसमें सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्तिरहित ज्ञान का प्रतिपादन हो; वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो; इस प्रकार के वेद हैं। अन्य बाइबल, कुरान आदि पुस्तकें नहीं।

जिस प्रबलता से कुरान ओर बाइबल की आलोचना दयानन्द ने की उतनी ही प्रबलता से पुराणों पर भी हमला किया और कहा कि यह पोपों की अधर्म लीला है इसका वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं। वेदों में कहीं भी मूर्ति पूजा का उल्लेख नहीं है। ईश्वर का एक ही नाम है- ओम। वेदों में शिव, विष्णु, गणेश आदि अनेक नाम हैं परंतु ये सब नाम ईश्वर के विशेषण हैं। शिव का अर्थ कल्याण है। शिव कोई अलग देवता नहीं है। वेदों में ही लिखा है 'एकम सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' इन्द्रम मित्रम वरूण माहु रग्नी दिव्यः सः सुपर्णो गरूत्मान।

महर्षि से पूछा गया कि वेदों में जो अनेक देवता लिखे हैं उसका क्या अभिप्राय है। महर्षि ने उत्तर दिया कि देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं जैसी कि पृथिवी, परन्तु कहीं इसको ईश्वर या उपासनीय नहीं माना है। देखो! इसी मंत्र में कि जिसमें सब देवता स्थित हैं, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है। यह उनकी भूल है कि जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इसी लिए कहाता है कि वही सब जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है।

सच्चे शिव के स्वरूप का वर्णन करते हुए ऋषि ने घोषणा की- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य ब्रह्म साक्षात्कार करना है। आधुनिक काल में केवल महर्षि दयानन्द ने ब्रह्म साक्षात्कार का उपाय बताया और विश्व के एक हजार सम्प्रदायों को मिट्टी में मिला दिया। परन्तु हमारे देश के पौराणिक वेद का नाम तो लेते हैं परन्तु वेद मार्ग के विरुद्ध चलने के लिए कटिबद्ध हैं। दयानन्द का जनजागरण अभियान और विषपान व्यर्थ गया। अंधविश्वास और पाखंड की जड़ें पुनः पातालभेदी हो गई हैं। बड़े-बड़े नेता, महंत, सन्यासी, संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित पौराणिकता की वज्र श्रृंखलाओं से बंधे हुए वैदिक शिव की नहीं अपितु पौराणिक अशिव की उपासना कर रहे हैं और निर्लज्जता पूर्वक एकलिंगेश्वर मंदिर के बाहर बिल्व पत्र, फल-फूल, धूप-दीप, चंदन, भोग, आक व धतुरा अर्पित करने के लिए लम्बी पंक्ति में खड़े हैं और समाचार पत्र भी प्रमुख समाचार के रूप में छाप रहे हैं-

शिवमय हुई छोटी काशी

जलाभिषेक के लिए राजधानी के शिवालयों में श्रद्धालुओं का रेला

भोलेनाथ के द्वार, उमड़े भक्त अपार

यह आर्य समाज की पराजय है। आर्य समाजों में जो वैदिक शिव की उपासना की गई उसका समाचार कोई भी अखबार छापने के लिए तैयार नहीं। हम उसी गड्ढे में पुनः जा गिरे जहां से दयानन्द ने हमें उठाया था।

वेद विरोधी द्रविडों ने जो अंधविश्वास और पाखंड का जाल फैलाया उसमें सारा भारत जलविहीन मछली की तरह तड़प रहा है। बंगाल में दुर्गा पूजा है जिसमें हमारे राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी सारे काम छोड़ कर अनेक दिनों तक दुर्गा पूजा में लीन रहते हैं। रामकृष्ण परमहंस और उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द दुर्गा के भक्त हैं।

वेदों के उद्भट विद्वान पण्डित धर्मदेव विद्या मार्तण्ड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक वेदों का यथार्थ स्वरूप में लिखा है-

'जहां तक धर्म और समाज के क्षेत्र में द्राविड़ों की देन का प्रश्न है, स्वयं द्राविड़ लेखकों के उदाहरणरूपेण Origin and spread of the Tamils के लेखक श्री रामचन्द्र दीक्षित और The Ancient Dravidians के लेखक श्री टी.आर. शेष अय्यंगार एम.ए. के अनुसार ये निम्नलिखित है-

(1) माता के रूप में देवी की पूजा (The worship of the mother goddess) काली, भद्रकाली, भगवती, अम्मां, दुर्गा इत्यादि के रूप में जो पूजा प्रचलित है वह द्रविड़ों ने चलाई। वह पूजा मांसमद्यमीनादि द्वारा तन्त्रग्रन्थों में बताई गई जैसा 'कुलार्णव तन्त्र' में लिखा है-

मद्यमांसविहीनेन, न कुर्यात्पूजनं शिवे।
न तुष्यामि वरारोहे, भगलिङ्गामृतं विना॥

अर्थात् हे पार्वति! मद्यमांस के बिना पूजा न करनी चाहिए। मैं उसके और लिङ्ग-पूजादि के बिना सन्तुष्ट नहीं होता। यदि यह मानें कि इस कुत्सित रूप में पूजा द्राविड़ों की देन है (जैसा सभी मानते हैं) तो इसमें अभिमान की नहीं, वस्तुतः लज्जा की बात है। हां, वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर को पिता के साथ-साथ माता के रूप में भी माना गया है 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधाते सुम्नमीम्हे'॥- ऋग्. (८.९८.११)"पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्॥" (ऋग. ६.१.५) किन्तु यह भैंसों, बकरों, शराब, सम्भोगादि द्वारा कुत्सित पूजा द्रविड़ों की देन है।

(2) इसके साथ ही सम्बद्ध लिङ्ग (पुरुष के जननेन्द्रिय और नारी की योनि) की पूजा (Phallic worship) है जो द्रविड़ों ने प्रचलित की। इसे उपर्युक्त दोनों तथा अन्य लेखक मानते हैं। शिव की पूजा को भी अधिकतर द्रविड़ों की देन बताया जाता है। The Ancient Dravidians के लेखक श्री शेष अय्यङ्गार एम.ए. ने डॉ. स्टीवन्सन के मत को उद्धृत करते हुए उसका समर्थन किया है कि-

Dr. Stevenson holds that Siva was the Tamilian God and was worshipped in two forms, one as a spiritual object of meditation and the as a material symbol or Linga to represent the invisible to the visible eyes. It is said of Ravana that he was a staunch votary of Linga which he worshipped with incense and flowers. From this, it may be inferred that Siva was a Dravidian deity.

- The Ancient Dravidians,
by T.R. Shesha Iyengar, P. 156

भावार्थ यह है कि डा. स्टीवन्सन का मत है कि शिव तमिल वालों का देव है जिसकी दो रूप में पूजा की जाती थी, एक तो ध्यान का आध्यात्मिक तत्व और एक भौतिक- लिङ्ग-अदृश्य के प्रतिनिधि के रूप में। रावण के विषय में कहा जाता है कि वह लिङ्ग का बड़ा पक्का उपासक था जिसकी पूजा वह गन्ध-पुष्पादि से करता था। इस कुत्सित लिङ्ग पूजा पर क्या गर्व किया जा सकता है? इससे तो हमारे देश के सदाचार का नाश ही हुआ है।

यत्र यत्र प्रयाति स्म, रावणो राक्षसेश्वरः।
जाम्बूनदमयं लिङ्गं तत्र तत्र स्म नीयते॥

ऐसा वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि रावण जहां-जहां जाता था वह सुवर्णमय लिङ्ग को साथ ले जाता था।

वेदों में शिश्नदेवों (कामियों) की बड़ी निन्दा है और लिखा है "मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः" अर्थात् लिङ्ग की पूजा करने वाले कामी व्यसनी पुरुष हमारे यज्ञों में कभी न आयें।'

-ऋग्. ७.२१.५॥ शिश्नदेवाः-अब्रह्मचर्याः, निरु.४.३.१९

अंत में सामवेदी जी ने कहा कि यदि विश्व को विनाश से बचाना है तो हम ऋषि बोधोत्सव पर संकल्प लें कि हम ईश्वरीय ज्ञान वेद को जन-जन तक पहुंचाएंगे, विश्व को पाखंड और अंधविश्वास से मुक्ति दिलाएंगे तथा सच्चा शिवोपासक बनाएंगे। इसके बाद सारा सभागार **'वैदिक धर्म की जय'** के नारों से गूंजने लगा।

ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री रामसिंह आर्य ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत और विश्व में नारी जाति के लिए जितना कार्य ऋषि दयानंद ने किया है उतना किसी ने नहीं किया है। वेद के अनुसार पुरुष व नारी अधिकार समान है। समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए ऋषि दयानंद ने कार्य किया।

आर्य समाज के मंत्री बलदेव राज आर्य ने ऋषि के ऊपर कविता प्रस्तुत की-

यदि बागवां बनकर दयानंद आया न होता
तो गुलशने हिन्द कभी गुलजार न होता।

वैदिक बालिका महाविद्यालय, मानसरोवर के निदेशक घनश्यामधर त्रिपाठी ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम दयानंद के महिमामंडन करने की बजाय हमें उनकी त्यागवृत्ति को अपनाना चाहिए। परोपकार की भावना को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

कार्यक्रम में आर्य समाज के युवा सदस्य रजत शर्मा ने कहा कि ऋषि दयानंद ने सच्चे शिव की प्राप्ति व मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए घर का त्याग कर दिया। शर्मा ने वीर रस की कविताएं प्रस्तुत की।

आर.एस. कोठारी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि ऋषि दयानंद ने ज्ञान, कर्म और उपासना का समन्वय किया। उन्होंने कहा कि हमें अंधविश्वास और मूर्ति पूजा का विरोध जारी रखना चाहिए।

कार्यक्रम में वैदिक बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजापार्क, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल, बर्फखाना की बालिकाओं ने सुंदर गीत व भजन प्रस्तुत किए। राजेश भटनागर जी ने ऋषि दयानंद पर 'ए दुनिया बता इससे बढ़कर अब और हकीकत क्या होगी' गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में महिला आर्य समाज, राजापार्क के पदाधिकारी, शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्या, प्रधानाचार्या, कर्मचारी और छात्राएं और नगर की आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्य समाज, आदर्श नगर के कार्यकारी प्रधान रवि नैयर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मेरी जीवन संगिनी

-: स्वामी श्रद्धानन्द :-

'आपकी चिंता दूर करने का यह महँगा सौदा नहीं है' यह कहकर निर्जीव तुच्छ आभूषणों के बदले अपने पति की जीवन्त प्रसन्नता खरीदने वाली उस वन्दनीय देवी को मिली शिक्षा का क्या अनुमान लगाया जा सकता है? वैदिक परिवार व्यवस्था ही कुछ ऐसी है। विवाह कोई सौदा या समझौता नहीं, बल्कि समर्पण होता है, एक-दूसरे को समझना, परस्पर उन्नति की इच्छा रखना। अगर माता शिवदेवी ने भी उस दिन सौदेबाजी की होती तो एक हीरा कोयले की परतों में ही दबा रह जाता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन हम सबके लिए प्रेरक है पर उस प्रेरक का प्रेरक भी तो कोई है। उस प्रेरक को भला श्रद्धानंद से बेहतर कौन बता सकता है। स्वामी जी के बलिदान दिवस पर उन्हीं की लेखनी से उन्हीं के जीवन का सबसे कीमती संस्मरण पाठकों को समर्पित। - सम्पादक

मेरी धर्मपत्नी शिवदेवी का यह नियम था कि दिन का भोजन तो मेरे कर चुकने के बाद करती थीं, लेकिन रात को जब कभी मुझे देर हो जाती और पिताजी भोजन कर चुकते तो मेरा और अपना भोजन ऊपर मँगा लेतीं और जब मैं लौटता तब अंगीठी पर गरम करके मुझे भोजन करातीं और बाद को स्वयं करतीं।

एक रात मैं आठ बजे घर लौट रहा था। गाड़ी चौक के पास ही छोड़ दी। यहीं बरेली के वृद्ध रईस मुंशी जीवन सहाय का घर था। उनके बड़े पुत्र मुंशी त्रिवेणी सहाय ने मुझे रोक लिया। गजक मेरे सामने लाकर रखी। मैंने अस्वीकार किया। वे बोले- ''तुम्हारे लिए ही तो दो आतशा खिंचवाई है। यह जौहर है।''

त्रिवेणी सहाय के छोटे भाई मेरे मित्र थे। उन्हें मैं बड़े के समान समझता था। न तो मैंने 'दो आतशा का अर्थ समझा, न जौहर का' बस एक गिलास पी गया। फिर गप्पबाजी शुरू हो गई और उनके मना करने पर भी मैं चार गिलास और चढ़ा गया। वास्तव में वह बड़ी नशीली शराब थी। पीते ही प्रभाव मालूम हुआ।

दो-तीन मित्र साथ चले। एक ने कहा- चलो मुजरा करायें। उस समय तक न तो मैं कभी वेश्या के मकान पर गया था और न कभी किसी वेश्या से बातचीत की थी। केवल महफिलों में नाच देखकर चला आता था। शराब ने इतना रंग दिखाया कि पांव ठीक से नहीं पड़ते थे।

हम एक वेश्या के कोठे पर जा धमके। कोतवाल साहब के बेटे को आया देखकर सब आवभगत में लग गयीं। बड़ी को मुजरा सजाने का आदेश हुआ। उसकी नौची के पास कोई रुपया देने वाला बैठा था। उसके आने में थोड़ी देर हो गई। न जाने पर मेरे मुँह से क्या अनाप-शनाप निकला। नौची घबराई हुई भागी-भागी आई और झुक कर अदब से सलाम किया।

उसी समय मुझे किसी दूसरे विचार ने आ घेरा। उसने क्षमा माँगने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि मैं राम! राम!! कहते हुए कोठे से नीचे उतर गया। नीचे उतरते ही घर की ओर लपका। बैठक में पलंग पर जा गिरा और जूते आगे गर दियो, जो नौकर ने उतारे। फिर उठकर ऊपर जाना चाहा लेकिन खड़ा नहीं हो सका। उस वृद्ध नौकर ने सहारा देकर मुझे ऊपर तक पहुँचाया।

छत पर पहुँचकर रोज की तरह किवाड़ बन्द कर लिए और बरामदे में पहुँचा ही था कि उल्टी होने लगी। उसी समय सुकोमल उंगलियों वाला एक हाथ सिर पर पहुंच गया और मैंने उल्टी खुलकर की। अब शिवदेवी के हाथ में मैं एक अबोध की तरह पड़ा हुआ था। उसने कुल्ला कराया, मेरा मुँह पोंछा और मेरी कमीज जो खराब हो गयी थी, बैठे-बैठे ही उतार दी तथा मुझे सहारा देकर भीतर ले गई। पलंग पर लिटाकर मुझ पर चादर डाल दी और पास बैठकर सिर और देह दबाने लगी।

मुझे उस समय का करुण और पवित्र प्रेम से भरा उसका मुख आजीवन नहीं भूलेगा। मैंने अनुभव किया कि माँ की ममतामयी छाया में निश्चिंत पड़ा हुआ हूँ, मेंरी आँखें धीरे-धीरे बंद हो गई। रात को घड़ी ने एक बजाया जब मेरी आँख खुली तो वह सोलह वर्षीय बालिका मेरे पैर दबा रही थी, मुझें जोरों की प्यास लगी थी मैं पानी मांगा। उसने सहारा देकर उठाया। अंगीठी पर से दूध उतारा और उसमें चीनी डालकर मेरे मुंह से लगा दिया। दूध पीने पर कुछ शक्ति आई और होश हुआ। उसी समय मेरे दिमाग में से अंग्रेजी उपन्यास का नशा उतर गया और गोस्वामी जी की चौपाइयाँ याद हो आयीं। मैं उसके पास खिसक कर आया, कहा- ''देवी! तुम बराबर जागती रहीं और भोजन तक नहीं किया। अब भोजन करो।''

''आपके भोजन किए बिना मैं कैसे खाती? और अब भोजन करने में क्या रुचि है? पत्नी ने कहा। उस समय की दशा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। अपने दुष्कर्म की कहानी सुनाकर मैंने पत्नी से क्षमा-प्रार्थना की। लेकिन वहाँ तो उसकी माता का उपदेश काम कर रहा था- आप मेरे स्वामी हैं, यह सब सुनाकर मुझ पर पाप क्यों चढ़ाते हैं। मुझे तो यह शिक्षा मिली है कि मैं बराबर आपकी सेवा करूँ।'' उस रात बिना भोजन किए हम सो गए।

दूसरे दिन से मेरा जीवन ही बदल गया। छावनी के पारसी मद्य-विक्रेता का बिल बढ़ता ही जा रहा था। दो दिन में ही उसका तीन सौ रुपये का बिल आ पहुंचा। उस दिन दो रोज की मुहलत लेकर टाल दिया। मुझे चिंता तो थी ही, पत्नी ने भोजन कराते समय मेरी चिंता का कारण पूछा। अब तो हम परस्पर कोई बात छिपाकर नहीं रखते थे। मैंने सब कुछ साफ-साफ कह दिया।

पत्नी ने कुल्ला करवाकर हाथ मुंह धुलवाये और अपना भोजन करने से पहले ही अपने हाथ के कड़े उतार दिये। मैं चकित रह गया- ''देवी! तुम कैसे हो सकता है? तुम्हें आभूषित करने के स्थान पर तुम्हें आभूषणों से रहित करने का पाप कैसे लूँ। उसी समय मुझे ज्ञान हुआ- पतिव्रता पत्नी पति की स्वास्थ्य रक्षा के समय माता, विपत्ति के समय भगिनी और उसे संतान सुख पहुंचाने के लिए धर्मपत्नी का रूप धारण करती हैं।''

धर्मपत्नी ने दूसरी जोड़ी दिखाकर कहा- ''एक जोड़ी पिताजी ने और दूसरी जोड़ी श्वसुर जी ने दी थी। इनमें एक जोड़ी व्यर्थ पड़ी है। यह सब मेरा है और तन-मन भी आपका है, तो इसके लेने में क्यों संकोच है? आपकी चिंता दूर करने का यह महंगा सौदा नहीं है।''

लालच से बचने के लिए मैंने कर्ज चुकाने के बाद बाकी रुपये पत्नी के बक्से में रख दिये और मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि जब कमाने लग जाऊंगा, तो खर्च किये हुए धन को फिर से आभूषणों में मिला दूँगा।

आधुनिक सच

-: अतुल कुमार :-

मियां-बीबी दोनों मिल खूब कमाते हैं
तीस लाख का पैकेज दोनों ही पाते हैं।
सुबह आठ बजे नौकरियों पर जाते हैं
रात ग्यारह तक ही वापिस आते हैं
अपने पारिवारिक रिश्तों से कतराते हैं
अकेले रह कर वह कैरियर बनाते हैं
कोई कुछ मांग न ले वो मुंह छुपाते हैं
भीड़ में रहकर भी अकेले रह जाते हैं
मोटे वेतन की नौकरी छोड़ नहीं पाते हैं
अपने नन्हे मुन्ने को पाल नहीं पाते हैं
फुल टाइम की मेड ऐजेंसी से लाते हैं
उसी के जिम्मे वो बच्चा छोड़ जाते हैं
परिवार को उनका बच्चा नहीं जानता है
केवल आया 'आंटी' को ही पहचानता है
दादा-दादी, नाना-नानी कौन होते हैं?
अनजान है सबसे किसी को न मानता है
आया ही नहलाती है आया ही खिलाती है
टिफिन भी रोज रोज आया ही बनाती है
यूनिफार्म पहना के स्कूल कैब में बिठाती है
छुट्टी के बाद कैब से आया ही घर लाती है
नींद जब आती है तो आया ही सुलाती है
जैसी भी उसको आती है लोरी सुनाती है
उसे सुलाने में अक्सर वो भी सो जाती है
कभी जब मचलता है तो टीवी दिखाती है
जो टीचर मैम बताती है वही वो मानता है
देसी खाना छोड़ कर पीजा बर्गर खाता है
वीक एन्ड पर मॉल में पिकनिक मनाता है
संडे की छुट्टी मॉम-डैड के संग बिताता है
वक्त नहीं रुकता है तेजी से गुजर जाता है
वह स्कूल से निकल के कॉलेज में आता है
कान्वेन्ट में पढ़ने पर इंडिया कहाँ भाता है
आगे पढ़ाई करने वह विदेश चला जाता है
वहाँ नये दोस्त बनते हैं उनमें रम जाता है
मां-बाप के पैसों से ही खर्चा चलाता है
धीरे-धीरे वहीं की संस्कृति में रंग जाता है
मॉम-डैड से रिश्ता पैसों का रह जाता है
कुछ दिन में उसे काम वहीं मिल जाता है
जीवन साथी शीघ्र ढूंढ वहीं बस जाता है
माँ-बाप ने जो देखा ख्वाब वो टूट जाता है
बेटे के दिमाग में भी कैरियर रह जाता है
बुढ़ापे में माँ-बाप अब अकेले रह जाते हैं
जिनकी अनदेखी की उनसे आँखें चुराते हैं
क्यों इतना कमाया ये सोच के पछताते हैं
घुट घुट कर जीते हैं खुद से भी शरमाते हैं
हाथ पैर ढीले हो जाते, चलने में दुख पाते हैं
दाँत-दाँत गिर जाते, मोटे चश्मे लग जाते हैं
कमर भी झुक जाती, कान नहीं सुन पाते हैं
वृद्धाश्रम में दाखिल हो, जिंदा ही मर जाते हैं
सोचना कि बच्चे अपने लिए पैदा कर
रहे हो या विदेश की सेवा के लिए।
बेटा एडिलेड में, बेटी है न्यूयार्क।
ब्राईट बच्चों के लिए, हुआ बुढ़ापा डार्क।
बेटा डालर में बंधा, सात समंदर पार।
चिता जलाने बाप की, गए पड़ोसी चार।
ऑनलाईन पर हो गए, सारे लाड दुलार।
दुनियां छोटी हो गई, रिश्ते हैं बीमार।
बूढ़ा-बूढ़ी आँख में, भरते खारा नीर।
हरिद्वार के घाट की, सिडनी में तकदीर।
तेरे डालर से भला, मेरा इक कलदार।
रूखी-सूखी में सुखी, अपना घर संसार॥

ऋषि बोधोत्सव : वेदों की ओर लौटो

-: टंकाराश्री अरुणा सतीजा :-

महार्षि देवदयानन्द संसार के सम्पूर्ण इतिहास में अपने ढंग के वह अकेले महापुरुष थे। वह युग प्रवर्तक थे, देवता थे, मानवता उद्धारक, दीनों के त्राता सत्य के अनुपम उपासक, वेदों के मतलवाले तथा प्रकाण्ड विद्वान, दया और आनन्द के सागर, प्यार के देवता, मानव के मसीहा बन कर इस धरती पर उतरे जिन्हें महाशिवरात्रि को अलौकिक प्रकाश का बोध हुआ। 1837 ई. की इस महाशिवरात्रि ने भारतीय जनजीवन में क्रांति ला दी यहीं से एक नये युग का शुभारंभ हुआ अर्थात् वैदिक युग का पुनः निर्माण। इस शिवरात्रि ने सत-तत्व को जन्म दिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर ऋषि बोध-रात्रि के नाम से व्याख्यात हो ई। इसे आर्य लोग प्रतिवर्ष ऋषि बोध-दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

भारत के लाखों शिव भक्तों की तरह मात्र 14 वर्ष के इस बालक ने भी पिता के आदेशानुसार शिवरात्रि का व्रत रखा। टंकारा ग्राम के शिव मंदिर में आधी रात को जब सभी भक्त भांग के नशे में सो गये तो मात्र यह बालक जिज्ञासावश शिव दर्शन के लिये जागता रहा। अचानक उसने देखा कि कुछ चूहे शिव प्रतिमा (शिवलिंग) पर चढ़े चढ़ावे को खा रहे थे तथा शिवलिंग पर विष्टा भी कर रहे थे। इस घटना ने बाल मन में शंका उत्पन्न कर दी क्यायह वही शिव हैं जो मनुष्यों को दुःखों से मुक्ति दिलाता है, नहीं कदापि नहीं हो सकता। यदि यह शिव नहीं तो फिर सच्चा शिव कौन है और कहाँ है? घटना तो साधारण थी परंतु प्रश्न बड़ा गूढ़ था। इस साधारण घटना ने जीवन की राह बदल दी। मूलशंकर से महर्षि बना दिया। उसी क्षण संकल्प किया कि मैं सच्चे शिव की खोज करके रहूँगा, घर छोड़ दिया। वह निकल पड़ा एक अनवरत यात्रा पर। कन्टकाकीर्ण पथों से कुसमों के देश तक के लिये। हिमालय की बर्फीली तलहटी व घने जंगलों के दुर्गम रास्तों में से गुजरते हुए अनेकों साधु संन्यासियों से मिले परंतु कहीं भी सच्चे शिव की प्राप्ति नहीं हो सकी। अन्त में मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरुविरजानन्द की कुटिया में जा पहुँचे। दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से आवाज आयी कौन? स्वामी जी यही तो प्रश्न मैं पूछने आया हूँ। गुरु जी समझ गये वर्षों से जिसका मुझे इंतजार था वही आज आ पहुँचा। गुरु चरणों में बैठ कर तीन वर्षों तक कठोर तप द्वारा शिक्षा प्राप्त की।

मानों बंद आँखों से गुरु विरजानद देश की दीन-हीन दशा को देख रहे हो। उन्होंने गुरु दक्षिणों में अपने होनहार शिष्य से मात्र वैदिक ज्ञान का प्रचार व प्रसार मांगा जिसमें स्वतंत्रता का मूल भाव समाहित हो। विदाई पर गुरु जी अपने शिष्य के प्रति अपनी भावना प्रगट करते हुए कहा- ओ काल जिह्वा। मैं तुझमें स्वर्णिम कल देख रहा हूँ, जग के उलझे प्रश्नों का निश्चित हल देखरहा हूँ। कितना विश्वास था गुरु को अपने शिष्य पर।

महर्षि देवदयानन्द जी को अर्न्तमन से भी ऐसा अनुीाव हो रहा था- जैसे मिट्टी की ऊर्जा जिसने सदियों से सूरज आस्था को सजोया था वहीं आज भीतर से कसमसा उठी है उसके भीतर ज्वालामुखियों के विस्फोटक कण धीरे-धीरे सिमटने लगे हैं। उसमें जाग रहा है मजबूत इरादों से बंधा एक जिस्म, एक आदि स्वर और रोशनी का एक सैलाब वहीं जैसे मूलशंकर हैं। त्रिशूल व त्रिनेत्र वाला शंकर। वह उठा तो समस्त दिशाएं जैसे नाच उठी हों। पृथ्वी से गगन तक के समस्त स्वर एक सम पर झंकृत हो गये हों और दिशाओं के द्वार उन्मुक्त हो गये हों।

मानों ईश्वर भी प्रसन्न होकर निम्न पंक्तियों से उन्हें आशीर्वाद दे रहा है-

'भोले शंकर तुझे विश्व का प्रिय शंकर बनना है,
युग निर्माता, न्याय विधाता विद्वदवर बनना है।
अंधकार से बंधे विश्व के खोल फैकने हैं
बन्धन आशीर्वाद फलीभूत हुआ।'

देवदयानन्द ने वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये महासमर छेड़ दिया। एक तरफ एक हजार सम्प्रदायों की वैश्विक शक्ति थी और दूसरी ओर अकेला कोपीनधारी दयानन्द था जो निर्ममतापूर्वक समस्त साम्प्रदायों को तर्क की तलवार से कुचलता जा रहा था। विश्व के आकाश में केवल दयानन्द की सिंह गर्जना सुनाई दे रही थी कि यदि मानवता को बचाना है तो वेदों की ओर लौट चलो। वेद ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं इसका आदि मूल परमेश्वर है ॐ सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत तक सारे विश्व में वैदिक राज्य था परंतु सात सौ वर्षों तक मुगलों और एक सौ अस्सी वर्षों तक अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया। उनकी भारत में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक नीतियों ने भारत को पतन के कगार पर पहुंचा दिया। चारों ओर अविद्या, पाखण्ड, बालविवाह, सती प्रथा, जाति प्रथा आदि ने जीवन को नारकीय बना रखा था। भारतीयों की दुर्दशा देख कर महर्षि कितनी बार रोये होंगे परंतु वीर योद्धा ने इस द्वद में भी हार नहीं मानी चाहे उन्हें 18 बार विषपान कराया गया।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम उनका मुख्य लक्ष्य था वेदों को इसका आधार बताया, वेदों का सच्चा स्वरूप लोगों के सामने रखा। वेदों में ही जीवन की बुनियाद है ऐसा बताया। वेद ईश्वरीय वाणी है। इनका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब स्त्री-पुरुषों का परम धर्म है।

वह ईश्वर के सच्चे भक्त थे। उन्होंने ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक और सर्व शक्तिमान बताया। इसी की सबको उपासना करनी चाहिए। इसका मुख्य नाम ओ३म् है। महापुरुषों को मान दो सम्मान दो पर उपासना उस ईश्वर की करो। चित्र के स्थान पर चरित्र की पूजा करो। प्रतिदिन पंच महायज्ञ करना प्रत्येक गृहस्थी का परम धर्म है। ईश्वर दाता है हम लोगों ने उसे व्यापारी या रिश्वतखोर समझ रखा है।

स्वामी जी ने राजनैतिक क्रांति के लिये जनजागृति लाने का प्रयास किया। उनके अनुासर 'पर राज्य कितना भी अच्छा क्यों न हो पर स्वराज्य से अच्छा नहीं।' उन्होंने भारत की स्वतंत्रता का प्रथम बिगुल बजाया। अंततः देश आजाद हुआ।

उन दिनों स्त्रियों, अनाथों व क्षूद्रों की स्थिति अति शोचनीय थी। स्त्री सशक्तिकरण के लिये स्त्री शिक्षा पर बल दिया। स्थान-स्थान पर नारी स्कूल व कॉलेज खुलवाये ताकि शिक्षित नारी उच्च-चरित्रवान तथा संस्कारवान संतान का निर्माण कर देश को अच्छे गुणवान, निर्भिक तथा शक्तिशाली चरित्रवान् नागरिक दे सके। सभी व्याप्त कुरीतियों का विरोध कर उनका उन्मूलन किया। जिसका परिणाम वर्तमान की नारी है। नारी पुरुष की अर्द्धांग्नि है। उसे पुरुष के समान अधिकार व सत्कार मिलना चाहिए। परस्पर प्रेम व सम्मान करना दोनों का परम कर्त्तव्य है।

अछूतों का उद्धार किया। उन्होंने बताया कि जाति का आधार जन्म नहीं कर्म है। सब मनुष्यों का खून एक है। सभी उस परमपिता परमात्मा की संतान हैं फिर असमानता व घृणा क्यों?

श्राद्धों का सही अर्थ बताते हुए कहा घर में बैठे जीवित माता-पिता तथा बड़ों की सेवा करो। श्रद्धापूर्वक उनका अभिनन्दन करो। प्रसन्न होकर वह तुम्हें सुख समृद्धि का आशीर्वाद देंगे।

वह हिन्दी भाषा के पक्षधर थे। उन्होंने अपने सभी ग्रंथों की रचना हिन्दी भाषा में की जबकि वह स्वयं गुजराती थे। हिन्दी जन साधारण की भाषा है। जैसे राष्ट्र नागरिकों का पिता है वैसे हिन्दी भाषा भारतावसियों की माँ है।

धर्म परिवर्तन के लिये शुद्धि आंदोलन चलाया जिसमें स्वामी श्रद्धानंद तथा पंडित लेखराम ने अपना सम्पूर्ण जीवन आहुत कर दिया। महर्षि ने लिखा है जहाँ दूसरे धर्म में जाने का मार्ग है वहाँ से वापस आने का क्यों नहीं। मुसलमान बनाए गये हिन्दुओं को यदि वापस शुद्ध कर दिया होता तो भारत माँ कटती नहीं। आज साम्प्रदायिकता व घृणा की भावना नहीं होती। जब तक मनुष्य को अलग करने वाली मजहब की दीवारें रहेगी तब तक नफरत की आग जलती रहेगी। आज का विश्व व्यापक घातक आतंकवाद इसी भावना का परिणाम है। सभी मजहबों की हस्ती को जिन्होंने न जाने कितने इंसानों का खून बहाया है और आगे भी बहाते रहेंगे, मिटा दिया जाए बस मनुष्य सच्चा मानव बन कर धरती पर स्वर्ग बनाए तो मानव जाति की रक्षा व सुख समृद्धि हो सकती है।

स्वामी जी के अनुसार किसी भी देश व जाति की जीवनशक्ति का आधार युवा पीढ़ी होती है। वह तीनों कालों का संगम होती है। स्वयं महर्षि ने भी लाला लाजपत राय, गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पं. लेखराम एवं भगत सिंह तथा उनके युवा साथियों की पौध को सुसंस्कारों तथा ओजस्वी भावनाओं से सींच कर वट-वृक्ष का रूप दिया जिनकी आंखों में चमक थी, सरफरोशी की तमन्ना थी।

अंत में उन्होंने समाज, देश, धर्म व जाति हित तथा मार्ग दर्शन के लिये कालजयी रत्नग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की वेदों के सार रूप में रचना कर समस्त मानव जाति को जीवन जीने की कला का उपहार दिया। इस ग्रंथ में 377 ग्रंथों का उल्लेख है। 1542 वेदमंत्रों के उद्धरण हैं। चारों वेद, ब्रह्मण ग्रंथ, उपनिषद, षड्दर्शन, 18 स्मृति, सूत्र ग्रंथ जैन, बौद्ध, कुरान, बाइबल आदि सबके उद्धहरण ही नहीं उनकी संदर्भ सूची भी दी गई है।

ऋषिवर संसार भर के सर्वश्रेष्ठ ऋषियों में से एक थे। उनका स्थान ऋषि पद से भी श्रेष्ठ था वह केवल महर्षि ही नहीं मेरी राय में वह विश्वामित्र व गुरु वशिष्ठ के समान थे। - श्रीयुत रंगा अय्यर

ऋषि बोधोत्सव एक प्रकाशमय शिवरात्रि ज्योतिपर्व है। कुछ करने व कर दिखाने का पर्व है। मन मंदिर में दिया जलाने का सुनहरा अवसर है। महर्षि के बताये जीवन सिद्धांतों पर चिंतन करे, मनन करें और आचरण करने का संकल्प करें क्योंकि वर्तमान की विषम परिस्थितियों में इन सिद्धांतों की महती आवश्यकता है। ऋषि का वैदिक जीवन दर्शन ही विश्व को सुखमय, आनन्दमय तथा भय मुक्त कर सकता है।

'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' पहले स्वयं श्रेष्ठ बनो फिर विश्व को श्रेष्ठ बनाओ।

आओ महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर उनके पद्चिन्हों पर चलने का संकल्प करें और उस परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करें-

कोई देवदयानन्द पुनः आकर अस्वस्थ धरा पर वसुधा की पीड़ा का शुभ उपचार करेगा। वह जनसत्ता के सत्तापतियों के कार्यक्रमों पर खुल कर पुनः विचार करेगा।

महापुरुष ही जनसाधारण के पथ-प्रदर्शन एवं प्रकाश स्तम्भ होते हैं।

ओ३म् शांति शांति शांति।

चुनावों में यंगिस्तान की भूमिका होगी अहम

-: अश्विनी कुमार :-

लोकसभा चुनावों की रणभेरी किसी भी दिन बज सकती है। राजनीतिक दल चुनावी समीकरण बनाने और हार-जीत के गुणा-भाग में जुट गए हैं। एक-दूसरे पर शालीनता की हदें पार कर प्रहार कर रहे हैं। सभी राजनीतिक दलों की नजर युवा मतदाताओं पर लगी हुई है। अंतिम मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद यह तय है कि इस बार आम चुनावों में यंगिस्तान अहम भूमिका निभाएगा। युवा मतदाता ही माननीयों के भाग्य-विधाता बनेंगे। लोकसभा चुनावों में 8.1 करोड़ मतदाता ऐसे होंगे जिन्होंने 2015 के चुनाव के बाद 18 वर्ष की आयु पूरी की है। नए मतदाता चुनावी लड़ाई की दिशा बदल सकते हैं। एक अनुमान के मुताबिक हर लोकसभा सीट पर औसतन 1.49 लाख मतदाता ऐसे होंगे जो पहली बार मतदान करेंगे। यह आंकड़ा 2014 में 297 सीटों पर जीत के अंतर से ज्यादा है। इनमें से कुछ मतदाताओं ने 2014 के बाद हुए विधानसभा चुनावों में वोट डाले होंगे। लोकसभा चुनाव 2019 में 29 राज्यों की 282 सीटों पर युवा निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है जिससे पता चलता है कि इन सीटों पर 2014 में जितना जीत का अंदर था, 2019 में पहली बार वोट डालने वालों की संख्या उससे कहीं अधिक है।

1997-2001 के बीच जन्मा यह मतदाता 2014 के चुनाव में मतदान के योग्य नहीं था। 282 सीटों में से 217 सीटें देश के बड़े राज्यों में हैं जिनमें जीत के अंतर से युवा मतदाताओं की संख्या काफी अधिक है। सबसे ज्यादा सीटों वाले उत्तरप्रदेश में नए मतदाताओं की औसत संख्या 1.15 लाख है जो कि 2014 के लोकसभा चुनावें में यहां की सीटों के जीत के औसत अंतर 1.86 लाख से कम है लेकिन उत्तर प्रदेश की 80 सीटों में से कम से कम 24 सीटें ऐसी हैं जिनकी तकदीर लिखने का काम युवाओं के हाथ में होगा। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों में 12 करोड़ 36 लाख युवा पहली बार मतदान करेंगे।

पहली बार वोट डालने जा रहे युवा मतदाता की सोच स्वतंत्र होती है और वह मतदान करने को लेकर काफी उत्साहित भी रहता है। आज युवाओं के हाथों में मोबाइल

है, बैग में लेपटॉप है, घर में कम्प्यूटर है। वह सोशल प्लेटफार्मों पर सक्रिय है इसलिए वह राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक घटनाचक्र की जानकारी रखता है। वह पुराने दौर के मतदाता से काफी अलग है। तकनीक से लैस युवा हर घटनाक्रम पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया भी दे देता है। आज वह फेक न्यूज और वास्तविक न्यूज के अंतर को समझने लगा है। उसे फेक न्यूज का खुलासा करने में घंटों नहीं बल्कि चन्द मिनट लगते हैं। ऐसे में जरूरी नहीं कि वह अपने परिवार की विचारधारा के अनुरूप मतदान करे। हर राष्ट्रीय मुद्दे पर उनके विचार परिवार से अलग हो सकते हैं। 2020 तक भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की होगी और हम दुनिया के सबसे युवा राष्ट्र बन जाएंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारतीय युवा विश्व में अपनी योग्यता का लोहा मनवा चुके हैं और जिस तेजी से हम अपने देश की प्रगति का सपना देख रहे हैं, उससे हमारी युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में सफलता के नए आयामों को छू रही है।

इसे विडम्बना ही कहा जा सकता है कि स्वतंत्र भारत में जयप्रकाश नारायण के छात्र आंदोलन के बाद से राजनीति में युवाओं की भागीदारी मुखर तो हुई, अनेक नेता आंदोलन से उपजे लेकिन समय के साथ-साथ बदलते सामाजिक ढांचे में राजनीति ने ऐसी छवि बनाई जिससे आधुनिक युवाओं ने दूरी बना ली। अन्ना आंदोलन के बाद भी नए युवा नेता उभरे। कुछ सफल हुए तो कुछ अस्त भी हो गए। वंशवाद और परिवारवाद की राजनीति ने युवाओं और देश की सक्रिय राजनीति में उनकी भागीदारी के बीच एक खाई बनाने का काम किया। इस सबके बावजूद यह कहना गलत नहीं होगा कि युवाओं की राजनीति में गहराती दिलचस्पी ने लोकतंत्र का चेहरा अधिक उजला किया है।

जरूरत है राजनीति में युवा चेहरों को लाए जाने की। सबसे बड़ा अहम सवाल यह है कि नए मतदाता किसे वोट देंगे? क्या वह जातिवादी राजनीति से ऊपर उठकर अपनी इच्छाओं के अनुरूप हर मुद्दे का सही विश्लेषण कर नई सत्ता चुनेंगे या नए मतदाताओं का इस्तेमाल केवल ट्रोलिंग के लिए किया जाएगा। राष्ट्रीय सुरक्षा, बेरोजगारी, सियासत में नैतिकता और सिद्धांतों की कमी जैसे मुद्दे उसे कितना प्रभावित करते हैं, यह देखना होगा। निश्चित रूप से वह मंदिर-मस्जिद जैसे मुद्दों से उद्वेलित नहीं होता, उसके मुद्दे व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ राष्ट्र का विकास भी हैं। देखना है कि वह कैसा जनादेश देता है।

गाजियाबाद से गाजीपुर बदलाव की लिस्ट लम्बी है

बात उस समय की है जब दिल्ली से सटा लोनी एक बड़ा नगर होता था। आज से करीब तीन सौ साल पहले। नगर तक पहुँचने के लिए जो द्वार बनाया गयाथा उसे कोटद्वार कहते थे। लोनी नगर मुस्लिम आक्रांताओं की मारसहता रहा और लहूलुहान होता रहा। उसी काल में कोटद्वार भी ध्वस्त हुआ और उस कोटद्वार पर जो शहर बसा उसे हम आज दिल्ली से सटे गाजियाबाद के नाम से जानते हैं।

गालियाबाद ही वहशहर है जहाँ से उत्तरप्रदेश की शुरुआत होती है। उत्तरप्रदेश के वाणिज्यिक और औद्योगिक उत्पादन का महत्वपूर्ण केन्द्र। यहाँ से लेकर पूर्वी उत्तरप्रदेश के गाजीपुर तक आपको हर जगह इस्लामिक आक्रमणऔर विध्वंस के निशान नामों के रूप में हर तरफ मिल जाएँगे। मसलन, उत्तरप्रदेश के कुशभवनपुर कब सुल्तानपुर हो गया, हमें नहीं मालूम। आज हमारे लिए वह सुल्तानपुर है। इसी तरह जिलों के स्तर पर प्रदेश में कुल 13 लि ऐसे हैं जिनका नाम या तो बदल दिया गया याफिर उन्हें किसी न किसी आक्रांता ने अपनी निशानी के तौर पर रखा। देश में इकलौता उत्तरप्रदेश ऐसा राज्य है जहाँ सबसे ज्यादा पौराणिक और ऐतिहासिक नामों से छेड़छाड़ की गयी। इसके बाद बिहार का नम्बर आता है।

इन्हीं दो जगहों पर हिन्दुओं से जुड़े सबसे ज्यादा पौराणिक स्थान थे इसलिए इन्हीं दो जगहों पर सबसे ज्यादा बदलाव किये गये। इलाहाबाद के अलावा गाजियाबाद, अलीगढ़, आजमगढ़, फैजाबाद, फर्रुखाबाद, फतेहपुर, फिरोजाबाद, जौनपुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, शाहजहाँपुर और सुल्तानपुर। इन सभी जिलों के नाम किसी न किसी मुस्लिम आक्रांता ने उन स्थानों की पौराणिक और वास्तविक पहचान छिपाने के लिए रखे या फिर बदल दिये। इसके अलावा उत्तर प्रदेश में रसूलपुर, मोहम्मदपुर या फिर मोहम्मदाबाद नामक गौव या कस्बे तो हर जिले में दो चार मिल जाएँगे जो मुसलमान शासकों ने अपने पैगम्बर की याद में रखे थे।

उन्होंने ये सब अनायास तो नहीं किया होगा। इसके पीछे उनकी मंशा क्या रही होगी इसे आसानी से समझा जा सकता है। लेकिन हमारे सामने सवाल ये है कि क्या इन नामों को इसलिए बदल देना चाहिए क्योंकि मुगलों ने रखे थे या फिर इसलिए क्योंकि ये इस्लामिक पहचान रखते हैं? यह जटिल प्रश्न है। इसे कुछ इस तरह से पेश किया जाएगा कि मानों इसे हटाने का मतलब इस्लामिक पहचान मिटाने का प्रयास है। कुछ हद तक ही ये बात सही है। लेकिन असल सवाल तो ये है कि भारत में मुसलमान की इस्लामिक पहचान क्या है? क्या अरबी नामों को जस का तस रखकर स्थानीय पहचान को मिटा देना इस्लामिक पहचान है या फिर स्थानीय नाम ही मुसलमान की भी इस्लामिक पहचान है?

जहाँ तक नाम का सम्बन्ध है तो उसका सम्बन्ध हमेशा स्थानीय पहचान से ही होता है। भारत में ही उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक नामों की ऐसी विविधता भरी विशिष्टता है कि सिर्फ नाम से ही हमें उस स्थान के बारे में पता चल जाता है कि हम देश के किस हिस्से के बारे में बात कर रहे हैं। कोई हमारे सामने थिंपू कहेगा तो हमारे मन में दक्षिण या पश्चिम का नक्शा नहीं उभरेगा। हमें उत्तर पूर्व का आभास होगा। इसी तरह तिरुअनन्तपुरम् कहते ही हमारा मन दक्षिण पहुँच जाता है।

ऐसे में औरंगाबाद चाहे तो महाराष्ट्र में हो या फिर बिहार में, वह हमें उस स्थान की कोई विशिष्ट पहचान नहीं देता। नाम लेने के बाद हमें यह भी बताना पड़ता है कि यह किस राज्य में है। ऐसे नामकरण औपनिवेशिक गुलामी के प्रतीक तो हो सकते हैं लेकिन स्थानीय पहचान से जुड़े हुए कभी भी नहीं। शासकों या कई बार महापुरुषों के नाम पर भी नामकरण करने से स्थानीय पहचान नष्ट होती है। इसलिए इसे हिन्दू मुसलमान नाम के रूप में देखने की बजाय उस जगह के स्थानीय पहचान और पौराणिक महत्व से जोड़कर देखना चाहिए। मोहम्मद कोई इस्लामिक नाम नहीं है। मोहम्मद अरबी नाम है जो मुसलमानों के पैगम्बर का भी नाम था। आप सोचिए जब उन्होंने इस्लाम की शुरुआत ही चालीस साल की उम्र में की तो उनका नाम मोहम्मद इस्लामिक नाम कैसे हो सकता है? यह नाम तो इस्लाम शुरु होने से पहले भी अरब में इस्तेमाल होता था। इसलिए भारत में जो इस तरह के नाम दिये गये हैं उनका इस्लाम से नहीं, बल्कि अरब संस्कृति से नाता जरूर है। ऐसे में सवाल उठता है कि सुदूर भारत के किसी जिले या गाँव का नाम अरबी संस्कृति के अनुसार क्यों होना चाहिए? इसकी तुक क्या है?

यह एक बेतुकी बात है जिसे भारत में उर्दू फारसी के महान शायर मोहम्मद इकबाल समझते थे इसलिए 1929 में इसी इलाहाबाद शहर में जब उन्होंने मुस्लिम लीग के बैनर तले ब्रिटिश हुकूमत के सामने एक अलग 'इस्लामिक राज्य' का खाका पेश किया था तो उस समय यह भी कहा था कि वह इस्लामिक राज्य अरब की भद्दी नकल नहीं होगा बल्कि हिन्दुस्तानी इस्लाम होगा। पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों ने पाकिस्तान तो ले लिया लेकिन उस पाकिस्तान को उन्होंने सच्चे इस्लाम के नाम पर अरब की भद्दी नकल ही बना दिया। सवाल हमारे सामने है। क्या भारत में भी हिन्दुस्तानी इस्लाम की वही सूरत होना चाहिए जो पाकिस्तान में है? या फिर मुसलमानों को भी स्थानीय जड़ों में अपनी पहचान खोजनी चाहिए जैसे बाकी दूसरे लोग करते हैं।

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवा)

-: भद्रसेन :-

आज आप ऐसी स्थिति में हैं कि आप के पास अपनी कमाई पंजी नहीं है। पुनरपि दूसरों के सहयोग से आप अपने जीवन में पढ़ाई करके या कमाई करते हुए आगे बढ़ने, जीवन में सफल होने का यत्न करते रहते हो। इन दिनों वही ही करना या वैसे ढंग से जीना चाहिए। जिससे आप पढ़ाई या कमाई के रूप में आगे बढ़ते रहें।

ऐसे ही जब कोई किसी प्रकार के धूम्रपान, नशे, जुए आदि में लगता है, तो उसका आगे बढ़ना रुक जाता है। ईश्वर या प्रकृति के नियम सबके लिए एक से हैं। उनमें किसी के लिए भी कोई भेदभाव नहीं होता। इसीलिए प्राकृतिक व्यवस्थाओं के लिए वेद ने सर्वत्र समान शब्द का प्रयोग किया है अर्थात् सभी के लिए एक जैसी हैं। **समानं मन्त्रं** ऋ. 10,101।

इस चर्चा की असली जड़, कसौटी है- हमारा आगे बढ़ना, जीवन का सफल होना हमारा जीवन दिनचर्या के रूप में आगे से आगे चलता है।

इस लेख में यही दर्शाया गया है कि शान-शौक में पड़ने पर कैसे-कैसे ये बातें हमें चक्रव्यूह में डाले रखती हैं और फिर हम चाहते हुए भी इन चक्रों से निकल नहीं पाते। युवाओं! आओ इस पर एक विचार करें।

चक्रव्यूह युद्ध की एक प्रक्रिया है, जिसका ऐतिहासिक रूप से महाभारत के साथ संबंध है। महाभारत की कथा से परिचित पाठक जानते हैं कि धृतराष्ट्र के पुत्रमोह के कारण दुर्योधन ने सर्वत्र मनमानी करनी शुरू कर दी। यहाँ तक की अहंकारवश दुर्योधन ने पाँचों पाण्डवों को बचपन से ही तंग करना शुरू कर दिया और उनके राज्य के अधिकार को सदा के लिए हड़पने का हर तरह से हरसंभव प्रयास किया। जुए की शर्त के अनुसार बारह वर्ष का वनवास और एक साल का अज्ञातवास जब पाण्डवों ने पूर्ण करने का प्रयत्न किया तो प्रथम उसकी असफलता का षड्यंत्र रचा। जब उस में भी सफलता न मिली तो शर्त के पूर्ण होने पर भी दुर्योधन ने पाण्डवों का राज्य न लौटाने की हठ न छोड़ी। श्रीकृष्ण ने दूत बनकर दुर्योधन को बहुत समझाया पर उसका एक ही उत्तर था- **'सूच्यग्रं नैव दास्यामि, विना युद्धेन केशव।'** अपने मामा शकुनि के उकसावे पर दुर्योधन के हठ, दुराग्रह धारण किया। महाभारत का युद्धभारत देश के लिए सर्वथा महाविनाश का कारण बना। तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रंथ का यह परिणाम दर्शाया है- 'परंतु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह? **'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः** (वृद्धचाणक्य अं. 16/17)' यह किसी कवि का वचन है। जब नाश होने का समय निकट आता है तब उल्टी बुद्धि होकर उल्टे काम करते हैं। कोई उनको सूधा समझाये तो उल्टा मानें और उल्टा समझावें उसको सूधी मानें। जब बड़े-बड़े विद्वान, राजा, महाराजा, ऋषि, महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस में करने लगे।' समुल्लास-11, पृष्ठ 239 (यहां सर्वत्र स्वामी वेदानन्द तीर्थ सम्पादित स्थूलाक्षर सत्यार्थ प्रकाश की पृष्ठ संख्या दी गई है।)

महर्षि की दृष्टि से महाभारत का युद्ध भारत के लिए महान् विनाशकारी सिद्ध हुआ और इसका मुख्य कारण दुर्योधन ही था। अत: उसके संबंध में महर्षि ने कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुए लिखा है-

'उसी दुष्ट दुर्योधन, गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक चलकर दु:ख बढ़ा रहे हैं।' 11,229

चक्रव्यूह— महाभारत युद्ध के प्रथम दस दिन कौरवों की ओर से भीष्म पितामह के सेनापतित्व में लड़े गए। इसके पश्चात कौरव सेना के सेनापति गुरु द्रोणाचार्य बने। उन्होंने वीर अर्जुन को युद्धभूमि से दूर ही उलझवा दिया और पीछे से दुर्योधन की चाल को पूरा करने के लिए युधिष्ठिर को पकड़ने का षड्यंत्र चक्रव्यूह के रूप में रचा। चक्रव्यूह की कला में वीर अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डव निपुण न थे। अत: युवक अभिमन्यु ने अपने अधूरे ज्ञान के आधार पर ही चक्रव्यूह के भेदने का उत्तरदायित्व संभाला। वीर युवक के सामने जब कौरवों की कोई चाल सफल न हुई तो अभिमन्यु को अनेक महारथियों ने घेर लिया। उन्होंने युद्ध के सारे नियमों को तोड़ा और निहत्थे अभिमन्यु को मार कर अपने दिल की भड़ास पूरी की।

यह तो प्रत्येक प्रकार से स्पष्ट है कि अभिमन्यु अपनीवंश परम्परा और इस उत्तरदायित्व को संभालने वाला एक युवक था। अपने कर्त्तव्य वहन में योग्य होने और जीवन को सफल बनाने के लिए वह योगेश्वर श्रीकृष्ण, वीर अर्जुन और गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त करते हुए योग्यता प्राप्त कर रहा था। ऐसे उभरते हुए युवक को छ:-सात महारथियों ने घेर लिया और हर नियम को तोड़कर सदा के लिए सुला दिया। ये महारथी अभिमन्यु के संबंधी थे। अत: उसकी प्रगति में सहायक होने चाहिए थे। पर युद्ध में विपक्षी हो जाने के कारण ये अभिमन्यु को घेरकर उसको पीछे धकेलने वाले ही सिद्ध हुए।

वस्तुत: आज के युवक की भी बहुत कुछ चक्रव्यूह में महारथियों से घिरे अभिमन्यु जैसी ही स्थिति है। ये आज के अभिमन्यु रूपी युवक पूर्ण योग्यता, क्षमता प्राप्त करने से पहले ही महारथियों द्वारा जीवनपथ से भटका दिए जाते हैं। तब निश्चित दिशा, स्पष्ट रास्ता, सुलझे विचारों के न होने के कारण सफल होना तो दूर की बात बन कर रह जाती है। जैसे कि हम देखते हैं कि राजनीतिक दलों ने कॉलेजों में भी अपने-अपने संगठन बना रखे हैं। राजनीतिक नेता इन छात्रों को अपनी इच्छानुसार चलाते हैं। जबकि छात्र वहाँ पढ़ने के लिए आते हैं। वे विशेष छात्र पढ़ाई की अपेक्षा उस-उस दल के सदस्य बनाने, दल की नीतियों का प्रचार करने तथा दल की शांति बढ़ाने-दिखाने के अवसर में ही अधिकतर लगे रहते हैं।

बचपन एक असमर्थता, अशक्तता, बहुत कम समझ की उम्र होती है। इन दिनों बच्चा निश्चिंत, निर्दोष, सरल, विश्वासी होता है। इस स्थिति में विकास करते-करते जब कोई प्रगति करता है, तो उसके शरीर, मन, बुद्धि, पढ़ाई, सामर्थ्य में कुछ प्रौढ़ता आती है। तब वह अनेक तरह से सुदृढ़, सक्षम होने लगता है। इन दिनों उसके शरीर में विचारों में, भावों में सुदृढ़ता, स्वावलम्बीपन आने लगता है। युवा, युवक, युवी शब्द यू (मिश्रणे-अमिश्रणे) धातु से बनते हैं। अत: इनका भाव है कि जो जोड़-तोड़ अर्थात् निर्माण तथा विनाश कार्य में सशक्त हो, क्योंकि वह आयु तूफान, बाढ़, आग की तरह शक्ति का भण्डार होती है। इन दिनों कुछ करने, कुछ बनने, प्राप्त करने, प्रगति करने की तीव्र इच्छा होती है और यह इस उम्र की एक स्वाभाविक बात है। इसके लिए वह सब कुछ करने के लिए सदा तैयार रहता है। ऐसे ही इन दिनों प्रत्येक में अन्याय, अत्याचार, शोषण न सहने, प्रतिरोध करने की स्वाभाविक भावना होती है। इसीलिए युवक नेताजी, शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद आदि की तरह हर संघर्ष करने के लिए सदा तैयार रहते हैं। वे किसी प्रकार की स्पर्धा, संघर्ष, बलिदान, त्याग, तपस्या, कष्ट सहन से घबराते नहीं। अत: जोश और आत्मविश्वास के साथ वे सब कुछ प्राप्त करना, जुटाना चाहते हैं, जिससे उनका जीवन पूर्ण विकसित हो सके।

हाँ, ये दिन चौराहे जैसे ही होते हैं, प्रगति सफलता, सच्चाई, अच्छाई के नाम पर जो कोई जो राह बताता है। युवक उत्साह, उमंग, जोश, शक्ति का स्रोत होने से उधर ही चल पड़ते हैं। युवकों के अधूरे ज्ञान, अधूरेपन, तीव्र तड़प, चाहना, जोध का अनेक लाभ उठा लेते हैं और तब युवक की स्थिति चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु जैसी ही हो जाती है।

आज के अकर्षण— युवावस्था में पग रखने वाले केा व्यावहारिक रूप से आज के जीवन में जो चीजें आ घेरती हैं, वे ये हैं जैसे कि-

1. शौक— जैसे-जैसे एक किशोर बड़ा होता है और अपने साथियों के सम्पर्क में आता है, तो अपने से बड़ों को ऐसा करते हुए देखकर या अपने साथियों की संगत से या देखा-देखी या किसी के कहने पर वह धूम्रपान करने लगता है। कुछ शौक-शौक में बीड़ी या सिगरेट या वैसे अब हुक्का कम हो रहा है और कई ढंगों से तम्बाकू, गुटाख खाने का रिवाज बढ़ रहा है। यदि परिवार वालों की विशेष नजर, देखभाल नहीं होती तो अंदर ही अंदर यह आदत पकने लगती है।

धम्रपान— बीड़ी, सिगरेट, हुक्के की सहायता से आग द्वारा तम्बाकू का सेवन किया जाता है। वह धूम्रपान कहलाता है। धूम्रपान के विविध रूपों, साधनों से धीर-धीरे 'यह मारक' विषय शरीर में अपना काम करता है। इनमें से एक 'निकोटिन' विष होता है। यह हृदय रोग, फेफड़े-गले के कैंसर, उच्च रक्तचाप, गुर्दे की बीमारी जैसे जानलेवा रोगों का कारण बनता है। वैज्ञानिक का कहना है कि एक सिगार में जितना निकोटिन होता है यदि, उसे इंजैक्शन से शरीर के रक्त में पहुँचा दिया जाए तो वह दो व्यक्तियों की मृत्यु का कारण बन सकता है।

इसलिए धूम्रपान के पैकेट पर वैधानिक चेतावनी लिखी होती है कि 'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।' इसी का एक साथी है- जर्दा, पान मसाला। अब यह डिब्बी में बंद होकर जेब की शोभा बनने लगा है। यह हानिकारक विषय है जो कि मुंह, गले, फेफड़े, पेट के लिए हानिकारक है। पाचनतंत्र इससे ध्वस्त होता है। जीभ अपनी स्वाद शक्ति खो बैठती है। दाँत-कुरुप, कमजोर हो जाते हैं। कई प्राणघ्नातक रोग देह में जड़ जमा लेते हैं।

2. शान— आज के युवकों को घेरने वाला दूसरा महारथी है- शान का प्रभाव, रूप। शान के नाम पर कुछ धूम्रपान की तरह मद्यपान की ओर झुकने लगते हैं। **'बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी-तदुच्यते'** जिसके सेवन से बुद्धि, सोच गड़बड़ाने लगे, ऐसे नशा पैदा करने वाले पदार्थ को मद, मद्य कहते हैं। आज नशे के साधन के रूप में किसी न किसी तरह की अनेक वस्तुएं प्रचलित हैं। जैसे कि शराब, गोली, कैप्सूल, इंजैक्शन, स्मैक,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

समृद्धि के प्रतीक पाताल देश (अमेरिका) के सिनसिनाटी में आर्य समाज की स्थापना के बाद लिखी गई पाती

-: आचार्य आनन्द पुरुषार्थी :-

समादरणीय आर्य प्रवर, सादर नमस्ते! ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा 19 से 22 जुलाई 2018 तक अटलांटा के एक पंचसितारा होटल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसका उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल डॉ. श्री देवव्रत जी ने किया। दो विभिन्न सत्रों में तीन विषयों पर हमें अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। माता-पिता का संतान के निर्माण में योगदान, गृह दायित्व के साथ अध्यात्म का समन्वय, अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ आर्य समाज की भूमिका- इन विषयों पर हमने उदाहरण सहित व्याख्यान दिए। वेदादि शास्त्रों के प्रमाण, ऐतिहासिक दृष्टान्त सहित प्रस्तुत किए। प्रथम मुख्य विषय पर लगभग 16 सुझाव रखे। प्रात:कालीन एक घंटे का ध्यान योग उपासना का प्रशिक्षण भी साधक जनों को देने का अवसर प्राप्त हुआ। अटलांटा के बाद न्यूयार्क के जमैका आर्य समाज में 29 जुलाई को पुन: महामहिम राज्यपाल जी का मिलना हुआ तो होशंगाबाद गुरुकुल के दिसम्बर के वार्षिकोत्सव पर आपको आमंत्रित किया। अटलांटा, न्यूजर्सी के अनेक परिवारों, आर्य समाजों में हमें यज्ञ, उपदेश, सैद्धांतिक चर्चा, योग दर्शन के अध्यापन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सिनसिनाटी नगर अटलांटा में 725 किमी व शिकागो से 463 किमी है। 10 अगस्त को एक परिवार में यज्ञ करवाने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं से चर्चा कर आर्य समाज की स्थापना कर दी। फिजिक्स के प्राध्यापक डॉ. अरूण नागपाल जी को प्रधान, श्री रवि त्रिवेदी जी को मंत्री, इंजीनियर राघवेन्द्र जी को कोषाध्यक्ष व कुछ अन्योंको दायित्व सौंपकर शपथ ग्रहण करवाई। अमेरिका सभा प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली के श्री विनय आर्य जी से अधिकारियों की फोन पर चर्चा करवाई। सभी ने इस ऐतिहासिक कार्य हेतु सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए हर संभव सहयोग की बात कही। अमेरिका के गणमान्य आर्यों को भी बाद में सूचना दी गई। सभी ने शुभकामनाएं व्यक्त की। अमेरिका में 50 राज्य हैं इसका क्षेत्रफल 1833500 वर्ग किमी है जो भारत से लगभग तीन गुना बड़ा है पर जनसंख्या भारत से एक तिहाई 32.5 करोड़ मात्र है। 69 प्रतिशत ईसाई, 24 प्रतिशत नास्तिक, 2 प्रतिशत यहूदी, 1 प्रतिशत मुस्लिम, 1 प्रतिशत बौद्ध, 1 प्रतिशत हिन्दू व 1 प्रतिशत अन्य धर्म के हैं। मूल निवासी 9.2 प्रतिशत मात्र बचे हैं। अग्रेजों ने उन्हें समाप्त सा कर दिया है। पूरी दुनिया की 40 प्रतिशत सम्पत्ति का स्वामी अमेरिका है पर विश्व की केवल 5 प्रतिशत आबादी यहां रहती है। ब्रिटेन से सबसे पहले आजाद 4 जुलाई 1776 को इस देश की स्थापना हुई थी। 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सेना का नेतृत्व करते हुए जनरल जार्ज वाशिंगटन ने विद्रोह कर दिया था। 13 उपनिवेश ब्रिटेन से अलग हो गए। श्री वाशिंगटन को राष्ट्र निर्माता माना जाता है। उस क्राँति को ही स्वतंत्रता संग्राम कहते हैं। देश की विशालता व विविधता के कारण अलग-अलग चार क्षेत्रों में चार पृथक-पृथक समय यहाँ की घड़ियों में देखा जाता है जिसका सर्वाधिक अंतर तीन घंटे का है। अमेरिका में मकानादि पर टैक्स बहुत ज्यादा देना होता है पर सरकार प्रजा के लिए इतना उत्तम प्रबंध करती है कि किसी को कोई शिकायत नहीं रह पाती। हाई स्कूल तक नि:शुल्क शिक्षा, चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था, पूरे देश में स्वास्थ्य व सौन्दर्यवर्द्धक हरियाली, सुरक्षार्थ अनेक प्रकार की पुलिस, प्रत्येक कार्यालय में कर्त्तव्यपारायण कर्मचारी, उत्तम मानक स्तर की बहुत चौड़ी सड़कें, सैकड़ों पर्यटक व दर्शनीय स्थल, बच्चों को आकृष्ट करते स्कूल लायब्रेरी सहित अनेक व्यवस्थायें भारत सहित विश्व के अनेकों देशों के नागरिकों को जैसे बाँध सा लेती हैं, कोई वापस अपने देश जाना नहीं चाहते हैं। पूरे देश में ट्रेन व बस वातानुकूलित ही होती हैं व यात्रा महंगी है पर जनसामान्य वायुयान की यात्रा ज्यादा करता है। विश्व के 44000 एयरपोर्ट में से 15095 एयरपोर्ट केवल अमेरिका में हैं। बच्चे 18 वर्ष के बाद स्वावलंबी हो जाते हैं अत: स्वच्छन्दता व स्वतंत्रता ज्यादा है। अंत में शिकागो आर्य समाज में 12 अगस्त को हमारा एक आध्यात्मिक विषय पर व्याख्यान हुआ जिसका फेसबुक पर सीधा प्रसारण हुआ था। 28 जून से 14 अगस्त तक लगभग 48 दिन के लिए हमने अपनी बारहवीं विदेश यात्रार्थ समय निकाला था। ईश्वर कृपा से ये सफल हुई। सी.एन.एन. सेंटर, कोका कोला म्यूजियम, डिज़नीलैंड, एयरफोर्स म्यूजियम, नियाग्राम प्रपात, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, आदि सैकड़ों स्थल हैं जिनको देखने लाखों पर्यटक अमेरिका आते हैं। सर्वेभ्यो नमो वाच्यम्-

माना बुढ़ापा जिन्दगी की रवानी है। जवानी में हो वैराग्य, तो बुढ़ापा भी जवानी है।

चक्रव्यूह में आज का .....

(पृष्ठ 6 का शेष)

अफीम, चरस, भाँग, हीरोइन और अनेक खाँसी आदि की दवाएं भी इस रूप में वर्ती जाती हैं। नशे के लिए आए दिन नए से नए साधन सामने आ रहे हैं, जिनसे नशा करने वाले घिरे रहते हैं। मस्ती, गम भुलाने के नाम पर इस आदत की ओर युवक प्रेरित होते हैं। नशे की आदत दूसरों की देखा-देखी जहाँ शोक शान में पड़ती है, वहाँ निराशा, सफलता न मिलने पर भी होती है। जैसे कि परीक्षा में पास न होने पर, साक्षात्कार के पश्चात् स्थान, नौकरी न मिलने पर वहां किसी चाहत के पूरी न होने पर भी उदासीनता उभर आती है। जैसे कि एकदम धनी बनने के लिए कोई लॉटरी में धन लगता है और जब वह नहीं निकलती तो वह निराश, हताश हो जाता है। ऐसे ही समाज में फैले भ्रष्टाचार, रिश्वत, भाई-भतीजावाद के कारण योग्य होने पर किसी की नौकरी का अवसर नहीं मिलता तो कुछ अपना दु:ख, कष्ट चिंता, भुलाने के लिए भी नशों में डूब जाते हैं। कभी-कभी यह विचार आ जाता है कि शराब से शक्ति-स्फूर्ति आती है जबकि व्यवहार में हम देखते हैं कि शराब पीकर अधिकतर गाली देते, झगड़ा करते, व्यर्थ बोलते, दुर्घटना करते और अनुचित कार्य करते हुए ही मिलते हैं। क्योंकि शराब का सबसे पहले बुद्धि, सोच पर उलटा प्रभाव होता है। यह किसी एक वर्ग या प्रदेश, देश की बात नहीं है, सभी की राय, सहमति है कि सबसे अधिक सभी तरह के अपराध और दुर्घटनायें शराब के कारण होती हैं। इसीलिए अपराध कराने वाले शराब के प्रतिबंध में सबसे बड़ी बाधा हैं।

यह नशा केवल धूम्रपान, मद्यपान, कैप्सूल, टीके द्वारा ही नहीं होता, अपितु अनेक हीरोइन, स्मैक, अफीम जैसे साधनों द्वारा जहाँ नशा करते हैं, वहाँ अब तो आए दिन इसकी अनेक नई-नई चीजें, दवायें सामने आ रही हैं।

विवाहों पर, वैशाखी, दिवाली, होली जैसे पवों पर और अब तो मुण्डन के भोजों पर भी शराब का रिवाज बढ़ रहा है। तब मुफ्त की देखकर अनेक आगे आ जाते हैं। घर-घर के ऐसे हजारों उदाहरण सामने आ रहे हैं, जहां श्रीकृष्ण के वशंजों 'यादवों' की तरह 'जो डूबे बोतलों के बंद पानी में, फिर न उभरे जिन्दगानी में' की उक्ति को चरितार्थ करते हैं।

मूलत: पहले कोई व्यक्ति शराब पीना शुरू करता है पर परिणाम कहता है कि फिर शराब उस व्यक्ति को पीने लगती है। स्वेच्छापूर्वक आत्महत्या करने वाले अधिकतर शराब के शौकीन होते हैं। शराब एक ऐसा प्राणघातक विषय है, जो शरीर में पहुँच कर मानसिक और शारीरिक क्रियाओं को भयंकर हानि पहुँचाता है। इससे आमाशय, जिगर, रक्तवाहिनियों, गुर्दों और स्नायुमण्डल की क्रियाशीलता क्षीण हो जाती है। इससे मृत्यु अपना प्रभाव दिखाती है।

3. मांक्ष भक्षण— कुछ यह समझते हैं कि मांस खाने से शरीर, हृष्ट-पुष्ट होता है तथा खाने में अधिक स्वाद देता है। जबकि हम भोजन शरीर को जीवित रखने और शक्तिशाली बनाने के लिए लेते हैं। मांस पचने में भारी और जल्दी सड़ता है। जिसके खाने से अनेक रोग होते हैं। पुनरपि स्वादु लगने और दूसरे के पचे-पचाए से जल्दी हृष्ट-पुष्ट के लिए अनेक उसकी ओर झुक जाते हैं।

जबकि बाह्य रूप से भी औरों की अपेक्षा मांस जल्दी सड़ता है। उसका यह सड़ना स्वत: उसका रोगों को पैदा करने का सब से बड़ा प्रमाण है। जो देर-सवेर रोगों को उत्पन्न करे, वह किसी तरह से भोज्य नहीं कहा जा सकता। मांस प्राप्ति के लिए जो हिंसा, क्रूरता होती है। उसको देखकर अनेक मांस भक्षण से मुँह मोड़ चुके हैं। ऐसी अनेक घटनायें प्राय: सामने आती रहती हैं। अत: कम से कम अपने अनुभव से सीख लेना, सब से सरल बात है।

4. धन की लालसा— कुछ युवक जल्दी अमीर बन जाने के चक्र में या बिना मेहनत के धन प्राप्त करने के लिए लॉटरी, जुए के विविध रूपों में पड़ जाते हैं। अपने पास जुए के लिए पैसे न होने पर फिर चोरी, झूठ, हेरा-फेरी, छीना-झपटी, लूट-खसूट और अनेक प्रकार की ठगियों का सहारा लेते हैं। अब लॉटरी वालों ने राखी बम्पर या दिवाली बम्पर आदि पर अनोखे-अनोखे विज्ञापन देने शुरू कर दिए हैं।

5. व्यभिचार— पहले व्यभिचार का अर्थ, भाव था। अनैन्तिक: सव्यभिचार: न्यायसूत्र 1,2,2 अर्थात् एक ठिकाना न होना। अब अवैधानिक मैथून-संबंध के लिए प्रसिद्ध हो रहा है। कुछ युवा शरीर की स्वाभाविक आकर्षण शक्ति के कारण व्यभिचार का चस्का लगा लेते हैं। देह स्पर्श से अनुभूत इस सुख का चस्का जब हावी हो जाता है, तो फिर न साथी के प्रति सच्चा-सुच्चा होने की बात बचती, जचती है। इसके पश्चात अवैध सम्बंधों की कहानी ऐसी चलती है कि वह फिर कहीं रुकने का नाम नहीं लेती। जिसके दुष्परिणाम गली-गली में अपने रंग दिखा रहे हैं। जिनकी चर्चा आए दिन दूरदर्शन के विविध चैनलों पर और पत्रों में हो रही है। तब एड्स जैसी भयंकर बीमारी ही अंत में हाथ लगती है।

-182, शालीमार नगर, होशियारपुर
मो.: 09464064398

गुलाम कश्मीर भारत को सौंपे पाक

-: ललिता निझावन :-

कुछ दिन पहले 22 फरवरी को हमने संसद द्वारा वर्ष 1994 मेंपारित कश्मीर प्रस्ताव की 25वीं सालगिरह मनाई। सर्वसम्मति से पारित इस प्रस्ताव में कहा गया कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न-अटूट अंग है और पाकिस्तान को पाक अधिकृत कश्मीर भारत को सौंप देना चाहिए।

यह प्रस्ताव क्यों पारित किया गया इसकी पृष्ठभूमि जानना दिलचस्प होगा। असल में तब अमेरिका पूरी तरह पाकिस्तान के पक्ष में था। अमेरिकी आशीर्वाद से तब की पाकिस्तानी प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो ने अपनी संसद में एक प्रस्ताव पारित करवाया जिसमें कहा गया कि पाकिस्तान, भारत में कश्मीर के विलय को मान्यता नहीं देता। पाकिस्तान ने हर साल पांच फरवरी को कश्मीर दिवस मनाने का ऐलान भी कर दिया। बता दें कि कश्मीर दिवस का प्रस्ताव सबसे पहले पाकिस्तानी जमात-ए-इस्लामी के नेता काजी हुसैन अहमद ने किया था जिसे बाद में नवाज शरीफ ने कश्मीर सॉलीडेरिटी डे स्ट्राइक कहना शुरू किया।

इसके बाद पाकिस्तान में कश्मीर को लेकर नए सिरे से 'जिहाद' की शुरूआत हुई या कहें कि कश्मीर को अलीग करने के लिए अमेरिका समर्थित पाकी षड्यंत्र आरंभ हुआ। इसमें ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कांफ्रेंस ने भी पाकिस्तान और अमेरिका का भरपूर सहयोग दिया। पाकिस्तान और अमेरिका की मदद से वर्ष 1993 में कश्मीर में अलगाववादी हुर्रियत कांफ्रेंस कीनींव रखी गई और दुनिया भर में कश्मीर मसले पर भारत के खिलाफ दुष्प्रचार शुरू हो गया। शिमला समझौते के तहत भारत कश्मीर को द्विपक्षीय मुद्दा मानता है, लेकिन हुर्रियत के रूप में पाकिस्तानियों ने कश्मीरी आतंकियों को तीसरे पक्ष के तौर पर पेश करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान की इन्हीं हरकतों के जवाब में भारतीय संसद में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के नेतृत्व में कश्मीर पर प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें स्पष्ट कर दिया गया कि जम्मू-कश्मीर भारत का अटूट अंग था, है और रहेगा। बेनजीर भुट्टो के बाद नवाज शरीफ ने सेना के सहयोग से प्रधानमंत्री पद संभाला। उन्होंने कश्मीर पर नया नारा दिया जिसे पाकिस्तान में अब भी दोहराया जाता है- कश्मीर बनेगा पाकिस्तान। वर्ष 1971 (बांग्लादेश का निर्माण) और 1984 (खालिस्तानी आतंकवाद के विनाश) में इंदिरा गांधी से करारी हार के बाद खुन्नस खाए बैठे पाकिस्तान ने 1987 के चुनावों के बाद कश्मीर में पूरी तरह घुसपैठ का मन बनाया। असल में इन चुनावों को लेकर काफी विवाद हुआ। चुनाव से पहले जहां फारूक अब्दुल्ला नीत नेशनल कांफ्रेंस और राजीव गांधी नीत कांग्रेस ने हाथ मिलाया वहीं जमात-ए-इस्लामी ने विपक्षी दलों का गठबंधन बनाया जिसे मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट का नाम दिया। चुनाव में नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस का गठबंधन जीत गया जिसे फ्रंट ने स्वीकार नहीं किया। उसने आरोप लगाया कि सत्ता हथियाने के लिए नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस ने फर्जी मतदान करवाया और बड़े पैमाने पर बूथ कैप्चरिंग की। इसके बाद राज्य में विरोध प्रदर्शनों का दौर शुरू हुआ जो धीरे-धीरे हिंसक होता गया। 1947 में बंटवारे के बाद से कश्मीर पर नजर गड़ाए बैठे पाकिस्तान के लिए यह कश्मीर में घुसने का अच्छा मौका था और उसने इसे गंवाया भी नहीं। कहना न होगा जमात-ए-इस्लामी ने भी उसका खुले दिल से स्वागत किया।

यह विस्तृत शोध का विषय है कि राजीव गांधी और उसके बाद, एक के बाद एक आई गठबंधन सरकारों के दौर में कैसे कश्मीर में आतंकवाद बढ़ता ही गया। आखिर क्यों जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग मानने वाले भारतीय दलों ने जमात-ए-इस्लामी, हुर्रियत कांफ्रेंस जैसे अलगाववादी दलों को मौन समर्थन जारी रखा? क्यों यूपीए-एक और दो के कार्यकाल में नक्सलियों और कश्मीरी आतंकवादियों को संसद की नाक के नीचे संवाददाता सम्मेलन करने की आजादी तक दी गई? कैसे धीरे-धीरे राष्ट्र विरोधी ताकतें एक होती गईं और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने उन्हें आशीर्वाद दिया? कैसे जमात के पास साढ़े चार हजार करोड़ की संपत्ति इकट्ठा हो गई और कैसे हुर्रियत आतंकियों ने घाटी में अपने अलग संचार टॉवर तक खड़े कर लिए? कैसे कश्मीर में अलकायदा और आईएसआईएस की पैठ हुई और प्रचलित सूफी इस्लाम की जगह वहाबी इस्लाम ने ले ली? कैसे इस राष्ट्रद्रोही रैकेट ने अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदितक अपनी जड़ें जमा लीं? कैसे इस रैकेट में भारत के अनेक स्वानामधन्य पत्रकार, इतिहासकार आदि शामिल हो गए? कैसे आम जनता को यह समझाया जाने लगा कि देशद्रोह ही 'उदारवाद' है और देशद्रोहियों का समर्थन 'अभिव्यक्ति की आजादी'? जाहिर है यह जहर एक दिन में नहीं फैला और इसे लिए सिर्फ पाकिस्तान ही जिम्मेदार नहीं है।

पुलवामा में 40 जवान गंवाने के बाद भारत में कश्मीर के बारे में जागरूकता की नई लहर उठी है। इस देशद्रोही रैकेट के खिलाफ दबी जुबान में बात करने वाली जनता अब खुलेआम न केवल इसके खिलाफ गुस्सा जाहिर कर रही है, बल्कि सरकार से इसके खिलाफ कार्रवाई की मांग भी कर रही है। वैसे तो मोदी सरकार ने हुर्रियत आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई मई 2017 में ही आरंभ कर दी थी जब नेशनल इनवेस्टीगेटिव एजेंसी ने उन्हें पाकिस्तानी सेना और वहां की लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसी आतंकी तंजीमों से मिलने वाले धन के खिलाफ जांच-पड़ताल शुरू की थी लेकिन पुलवामा के बाद सरकार ने इनके खिलाफ सही मायने में कड़ी कार्रवाई शुरू की। पहले जहां दूसरी पंक्ति के आतंकियों की जांच हो रही थी, वहीं अब पहली पंक्ति के आतंकियों की धरपकड़ शुरू हुई। इनका सिक्योरिटी कवर समाप्त कर दिया और निजी संचार नेटवर्कों को ध्वस्त करने का काम आरंभ किया गया जिससे ये पाकिस्तानी आकाओं से सीधे निर्देश लेते थे।

अब यह भी पहली बार हो रहा है जब घाटी की सबसे बड़ी, लेकिन खामोशी से जहर फैलाने वाली तंजीम जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध लगाया गया है और इसके छोटे-बड़े करीब साढ़े तीन सौ नेताओं को जेल में डाला गया है। घाटी में जमात का असर कितना है उसे इस बात से समझा जा सकता है कि यह घाटी में करीब 300 मस्जिद, 400 स्कूल, और 1,000 मदरसे चलाती है। चुपचाप काम करने वाली जमात न केवल भारत के खिलाफ बच्चों का ब्रेनवास करती है, बल्कि हिज्बुल मुजाहिदीन और अन्य आतंकी जमातों को काडर भी सप्लाई करती है। घाटी के अधिकांश पत्थरबाज जमात की ही पैदाइश हैं। ध्यान रहे जमात और हुर्रियत कांफ्रेंस का मां-बेटी का रिश्ता है।

जमात और हुर्रियत पर कार्रवाई से निःसंदेह कश्मीर का माहौल सुधरेगा, लेकिन ये फौरी कदम हैं। सरकार को मुख्यधारा की पार्टियों जैसी पीडीपी, नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस में घर बना चुके देशद्रोही तत्वों पर भी कार्रवाई करनी होगी। घाटी में वहाबी मस्जिदों में भारत के खिलाफ खुलेआम जहर उगला जाता है तथा मदरसों और स्कूलों में अलगाववाद और बगावत के बीज बोए जाते हैं। अगर मोदी सरकार वास्तव में कश्मीर में बदलाव चाहती है तो उसे शीघ्रातिशीघ्र इस समस्या पर ध्यान देना होगा। हम कितना ही इस बात को छुपाने की कोशिश करें लेकिन यह बात सच है कि घाटी में आतंकी इस्लाम को औजार की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। वहां से पंडितों को पहले ही खदेड़ा जा चुका है, ऐसे में इसका विरोध करने वाला भी कोई नहीं बचा है। कश्मीर समस्या तब तक हल नहीं होगी जब तक उसे बढ़ावा देने वाली राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रैकेट की रीढ़ नहीं तोड़ी जाती जिसमें अनेक पत्रकार, इतिहासकार, वामपंथी-नक्सली अतिवादी, व्यापारी आदि शामिल हैं। जैसे हुर्रियत और जमात का सच खुली किताब है, इस रैकेट के बारे में भी सभी जानते हैं। इन्हें चिन्हित करना कोई बड़ी बात नहीं है। पकड़े जाने पर ये 'लोकतंत्र', 'अभिव्यक्ति की आजादी' आदि के नाम पर बड़ा तमाशा खड़ा करेंगे, लेकिन सरकार को इससे डरना नहीं चाहिए और इन्हें देशद्रोह के आरोप में हमेशा के लिए जेल में डाल देना चाहिए। मोदी सरकार को कश्मीर में अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले अनुच्छेद 370 और 35ए को समाप्त करने के लिए गंभीरता से प्रयास करने चाहिए। अगर पाकिस्तान अपने कब्जे वाले कश्मीर में मूल निवासियों को बाहर कर वहां पंजाबियों को बसा सकता है तो भारत को क्या समस्या है? भारत में कश्मीर का विलय उतना ही वैध और वास्तविक है जितना अन्य रियासतों का। जब भारत कश्मीर पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों को ही मान्यता नहीं देता तो कश्मीर को विशेष दर्जा देने का औचित्य क्या है? इस मसले पर थोथी बहस अब समाप्त होनी चाहिए। कश्मीर तो भारत का अंग है ही, अब गंभीरता से प्रयास इस बात के होने चाहिए कि अलगाववाद का जहर आने वाली पीढ़ियों तक न पहुंचे और पाकिस्तानी कब्जे वाला कश्मीर भी वापस लिया जाए। आज अंतरराष्ट्रीय समीकरण हमारे पक्ष में हैं और पाकिस्तान पाई-पाई को मोहताज है। इससे अच्छा अवसर भारत को शायद ही फिर कभी मिले। 'कश्मीर बनेगा पाकिस्तान' का नवाज शरीफ का सपना तो कभी पूरा होता नहीं दिखता। हम पाकिस्तानियों को कहना चाहते हैं- कश्मीर था हिंदुस्तान, है हिंदुस्तान और रहेगा हिंदुस्तान।

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

त्यव्रत सामवेदी सम्पादक, आर्य नीति
...यपुर - 4

डाक टिकिट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित : ....

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M : 9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.